बाल प्रसंग

सितम्बर 2024 राष्ट्रीय बाल भवन अंक 01

राष्ट्रीय बाल भवन
कोटला मार्ग, नई दिल्ली-110002

बाल प्रसंग

राष्ट्रीय बाल भवन
NATIONAL BAL BHAVAN

विषय सूची

1.	सचिव, स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग का संदेश	3
2.	अध्यक्ष की कलम से	5
3.	निदेशक की कलम से	7
4.	बच्चों की स्वरचित कविताएँ	
	आयु वर्ग 10 से 12	8
	आयु वर्ग 13 से 16	13
5.	पुरस्कृत चित्रांकन एवं स्लोगन	
	आयु वर्ग 10 से 12	18
	आयु वर्ग 13 से 16	19
6.	बच्चों के लिए अभ्यास कार्य	
	(क) रिक्त स्थान भरो	22
	(ख) विलोम शब्द	23
	(ग) पर्यायवाची शब्द	23
	(घ) नीचे लिखे एकवचन शब्दों के बहुवचन शब्द लिखें।	24
	(ड.) नीचे दिये गये अंकों को देवनागरी में लिखें।	25
7.	कर्मचारियों की स्वरचित काव्य रचनाएँ।	27

प्रस्तुती

हिन्दी अनुभाग

राष्ट्रीय बाल भवन, कोटला मार्ग

नई दिल्ली-110002

सचिव, स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग का संदेश

प्रिय बच्चों,

"बाल प्रसंग" पत्रिका के प्रथम अंक के प्रकाशन पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ। मैं बाल भवन के इस प्रयास की सराहना करता हूँ। मुझे विश्वास है कि स्व-रचित रचनाओं को सचित्र प्रकाशन के रूप में देखकर बच्चों और कर्मचारियों को बहुत प्रोत्साहन मिलेगा।

यह देखकर मुझे प्रसन्नता है कि हिंदी पखवाड़ा कार्यक्रम के दौरान प्रतियोगिताओं के लिए दिए गए विषय उपयोगी तथा प्रेरणादायक थे। बच्चों द्वारा किया गया चित्रांकन कार्य भी बहुत आकर्षक है। हिंदी, जो हमारी प्रमुख भारतीय भाषा है, न केवल संवाद का साधन है बल्कि यह हमारी संस्कृति और परंपराओं का भी महत्वपूर्ण हिस्सा है। हिंदी भाषा का अध्ययन और उसका उपयोग करना हमारे लिए गर्व का विषय होना चाहिए।

बच्चों का हिंदी की ओर रुझान बढ़ाना इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि यह हमारी सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित रखने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हिंदी भाषा का ज्ञान न केवल आपके संवाद कौशल को बढ़ाता है बल्कि आपके व्यक्तित्व को भी निखारता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) में भी भाषाओं के महत्व पर विशेष ध्यान दिया गया है। इसमें यह उल्लेख किया गया है कि प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा में होनी चाहिए, ताकि बच्चों का अपने सांस्कृतिक मूल्यों से जुड़ाव बना रहे और वे अपने विचारों को सहज रूप से व्यक्त कर सकें।

मुझे विश्वास है कि "बाल प्रसंग" पत्रिका के माध्यम से आपको हिंदी भाषा में प्रवीण बनने की प्रेरणा मिलेगी। मेरा आप सभी से अनुरोध है कि इस पत्रिका का पूरा आनंद लें, इसमें प्रस्तुत लेखों और कविताओं को ध्यानपूर्वक पढ़ें और अपनी जीवन यात्रा में निरंतर प्रगति करें।

(संजय कुमार)

“हिन्दी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति
का सरलतम स्त्रोत है।”

– सुमित्रानंदन पंत

अध्यक्ष की कलम से .....

राष्ट्रीय बाल भवन के हिन्दी अनुभाग द्वारा प्रकाशित बाल प्रसंग के माध्यम से मैं आप सभी बच्चों से यह कहना चाहता हूँ कि हिन्दी में कार्य करना हम सभी के लिए सम्मान एवं गौरव की बात है। इसके अलावा कार्यालय में कार्य करने वाले कर्मचारियों को भी इस बात से अवगत कराना चाहूँगा कि 'हिन्दी' कार्यालयों में किए जाने वाले कार्यों की भाषा तो बाद में बनी उससे पहले यह जन-मानस की भाषा बन चुकी थी। भारत का स्वतंत्रता आंदोलन भी इस बात का साक्षी है कि हिन्दी ने सभी देशवासियों को एकजुट करने में अहम भूमिका निभाई है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 (1) के अनुसार हिन्दी हमारे देश की राजभाषा है। राजभाषा नीति का उद्देश्य है कि सरकारी कामकाज में हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग हो। 14 सितंबर, 1949 को संविधान सभा ने जनभाषा हिन्दी को राजभाषा का दर्ज़ा प्रदान किया। तब से हम प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस मनाते हैं।

जैसा कि सभी जानते हैं सितम्बर माह में प्रत्येक कार्यालय/संगठन/उपक्रम/बैंक में हिन्दी सप्ताह/पखवाड़ा कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। यह बहुत ही हर्ष की बात है कि राष्ट्रीय बाल भवन में कर्मचारियों के साथ-साथ एक दिन बच्चों के लिए भी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। इस दौरान बच्चे तथा कर्मचारी स्वरचित रचनाएं देते हैं तथा हिन्दी से संबंधित अन्य गतिविधियों में भी भाग लेते हैं। 'बाल प्रसंग' पत्रिका इस दिशा में बहुत बड़ी उपलब्धि है। इस पत्रिका में बच्चों तथा कर्मचारियों की स्वरचित रचनाएं वर्तमान समय से संबंधित मुख्य विषयों पर आधारित हैं। बच्चों द्वारा किया गया चित्रांकन और स्लोगन लेखन भी बहुत ही अच्छा रहा है।

राष्ट्रीय बाल भवन द्वारा किये गये इस प्रयास के लिए आप सभी बधाई के पात्र हैं। आप इसी प्रकार राजभाषा हिन्दी के प्रति अपना प्रेम बनाए रखें और कार्यालय तथा अपने जीवन में भी इसका अधिक से अधिक प्रयोग करें। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ यह पत्रिका आपके समक्ष प्रस्तुत है।

(विपिन कुमार)

“आप जिस तरह बोलते हैं,
बातचीत करते हैं,
उसी तरह लिखा भी कीजिए।
भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए।”

– महावीर प्रसाद द्विवेदी

निदेशक की कलम से .....

"राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक है।"

ये पंक्तियाँ राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा कही गई हैं। एक भाषा के रूप में यदि हिन्दी भाषा की विकास यात्रा की बात करें तो यह एक लंबी और सतत प्रक्रिया है।

राष्ट्रीय बाल भवन में बच्चों और कर्मचारियों का रुझान राजभाषा हिन्दी की ओर बढ़ाने के लिए अनेक रोचक गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं। इन गतिविधियों में कविता, स्लोगन, चित्र आदि के माध्यम से प्रतियोगी अपने मन के भावों और विचारों को रंगों और भाषा के मोतियों में पिरोकर कागज़ पर उकेरते हैं। इन्हीं रचनाओं में से कुछ अति उत्तम कृतियों को संकलित करके इस 'बाल प्रसंग' पुस्तिका को तैयार किया गया है।

इस पहले अंक में 'हिन्दी पखवाड़ा' 2023 कार्यक्रम के दौरान राष्ट्रीय बाल भवन, जवाहर बाल भवन (मांडी), सदस्य स्कूली बच्चों तथा कर्मचारियों की स्वरचित रचनाओं को शामिल किया गया है। राष्ट्रीय बाल भवन के हिन्दी अनुभाग के इस सराहनीय प्रयास को आपके समक्ष रखते हुए मुझे हर्ष हो रहा है।

मुझे आशा है कि इस 'संकलन' में प्रकाशित रचनाएँ आपको अवश्य पसन्द आयेंगी। इस संबंध में यदि आपके कुछ सुझाव हैं तो वे भी आमंत्रित हैं।

(मुक्ता अग्रवाल)

बच्चों की स्वरचित कविताएं

आयु वर्ग

10–12 वर्ष

खुशियाँ लाईं टिप-टिप बूँदें

(प्रथम पुरस्कार)

हुई है सालों बाद पूरी हमारी ख्वाहिश,
सूखे खेतों में हुई ऐसी प्यारी बारिश।

ज़िंदगी में हमारी खुशियाँ भर जाएं अगर,
ऐसी बारिश हर साल आ जाए अगर।
न जाने क्यों खुशियाँ बारिश सी लगती हैं,
एक पल आती हैं, दूसरे पल चली जाती हैं।

खिल जाते हैं फूल-पौधे, आती खेतों में हरियाली है,
नाच उठते हैं मोर प्यारे, और गाना गाते मतवाले हैं।
मोर तो मोर क्या गाते, गाते तो बादल और बारिश भी हैं,
गड़-गड़ करते बादल और टिप-टिप करती बूंदें हैं।

नाच उठता है सारा जहाँ, ऐसी बारिश जब आती है,
बोल पड़ते हैं झींगुर और मेंढक।
टर-टराते और चीखते-चिल्लाते हम मानव भी,
उनके साथ घुल-मिल जाते हैं।

बादल काले हो जाते हैं और पेड़ बन जाते हैं हरे,
कुछ फूलों से कुछ पत्तों से भरे।
अब बस हमारी है यही सिफारिश,
कि हर साल आये, बस ऐसी ही बारिश।

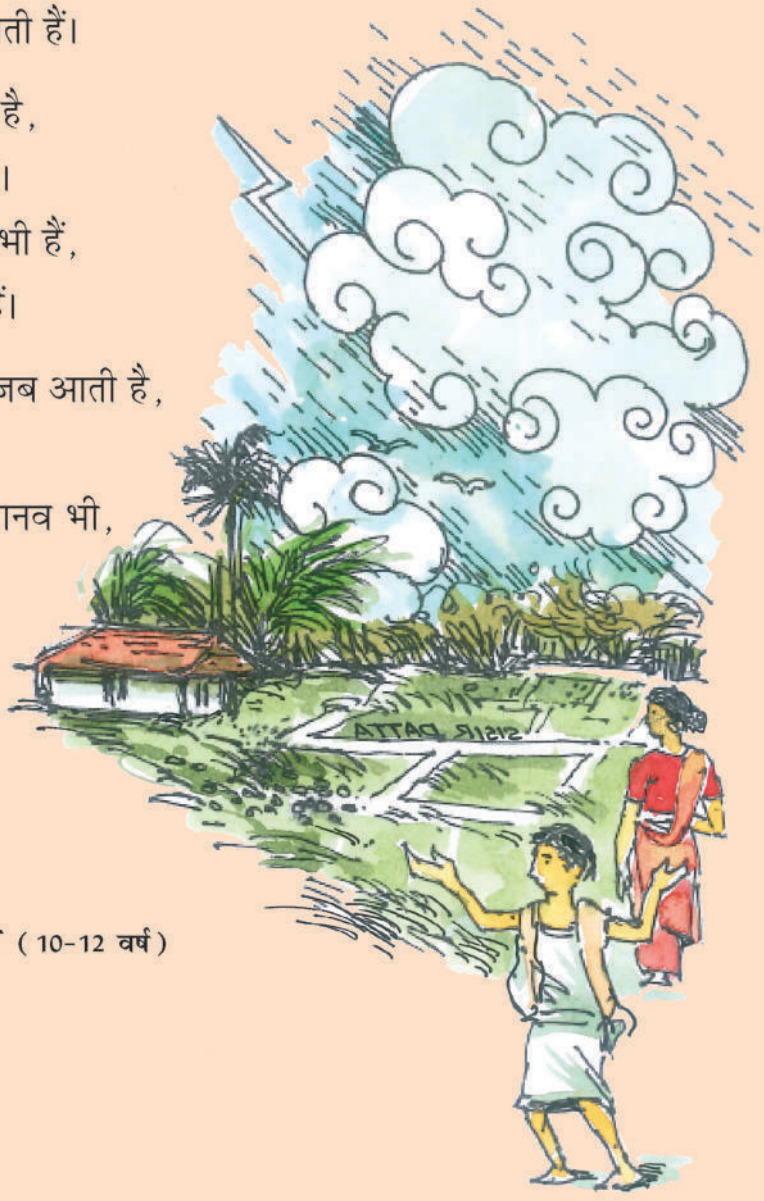

तमन्ना (10-12 वर्ष)

मेरे मन को भाए बारिश

(द्वितीय पुरस्कार)

रिमझिम बारिश, रिमझिम बारिश,
सावन के संग आई बारिश।

हंसी मज़ाक करते हैं,
बारिश की बूँदे गिनते हैं।

रिमझिम बारिश, रिमझिम बारिश,
मेरे मन को भाये बारिश।

ये है बड़ी सुहानी,
लोगों के दिल को भाती।

कुछ देर के लिए आती है,
सुख देकर दु:ख ले जाती है।

छोड़ जाती है एक जादुई सुगंध,
बारिश का मौसम बड़ा सुहाना।
कर जाता है दीवाना।।

अज़का अशरफ (10-12 वर्ष)

ज्ञान का भण्डार : पुस्तक

(तृतीय पुरस्कार)

पुस्तक एक कमाल की चीज़,
करो इससे बातचीत।
सिखाती है हमें बुराई से लड़ने के तरीके,
जीवन जीने के सलीके।

ये पुस्तकें हैं ज्ञान का भंडार,
हमारी कल्पना का श्रृंगार।
जब कोई न हो आपके पास,
सिर्फ किताबें देती हैं आपका साथ।

पहुँचा देती हैं कल्पनाओं के साम्राज्य में,
जीवन को देती हैं पंख एक बाज़ से।
उड़ना और लड़ना सिखाती हैं,
जीवन में आगे बढ़ने का फन दिखाती हैं।

अगर मिल गई तुम्हें पुस्तकों की मंज़िल,
हो जाओगे तुम सफलता के काबिल।

आफिया अशफ़ाक (10-12 वर्ष)

बाल भवन के विज्ञान विभाग की गतिविधियों की एक झलक

बच्चों की स्वरचित कविताएं

आयु वर्ग

13–16 वर्ष

एक मेरा सपना है

(प्रथम पुरस्कार)

एक मेरा सपना है,
जहाँ हर भारतीय मानता
एक-दूसरे को अपना है।
देश की समृद्धि, सभ्यता एवं
विकास के लिए मंजूर हमें
भरी धूप में तपना है,
एक मेरा सपना है, जहाँ सभी को
'जय हिंद'-जय हिंद' जपना है।

मैं, ऐसा चाहती हूँ,
देश हो दीपक और मैं उसकी बाती हूँ।
उजाला तो वो दे, मैं उसके लिए जल पाती हूँ,
अपने परिश्रम से माटी को और ज्यादा
वैभवशाली बनाना चाहती हूँ।

मेरे दिल से हर रोज़ एक चाह निकलती है,
माँ तुझे इतना दे रही है,
तू भी उसके लिए कुछ करती है?
चल आगे बढ़, रुक मत,
अभी तो आगे तुझे देनी सेना में भर्ती है,
हार मत मान, मकड़ी की तरह बन,
देख उसे वो कितनी बार
गिरकर ऊपर चढ़ती है।

एक दिन आएगा,
जब मैं सीमा पर होऊँगी।
बस देश के लिए जागूँगी,
देश के लिए ही सोऊँगी,
दु:ख, दर्द, पीड़ा, रिश्ते-नाते सब
भूल कर, मैं कभी न रोऊँगी।
मेरा वादा है, हे मां! अपने लक्ष्य
से कभी न खोऊँगी, कभी न खोऊँगी।।

मुझे अपना हर क्षण, हर पल राष्ट्र को है देना,
पर मेरी इस बात को सुन,
भर आते हैं मेरी माता के नैना।
कहती है, मेरी बेटी!
तेरे बिना नहीं आता मुझे चैना,

अब मैं उन्हें कैसे समझाऊँ।
मेरी दो माँ हैं,
एक के साथ तो रही हूँ बचपन से,
अब थोड़ा समय दूसरी माँ को भी तो है देना ।
मेरा एक ही सपना है,
मैं हूँ वर्दी में, साथ में बंदूक हो,
फिर तो बस देशद्रोही को
मज़ा चखाना है।

आकांक्षा गौतम (13-16 वर्ष)

(माँ - भारत माँ के लिए प्रयोग हुआ है)

सपना है मेरा

(द्वितीय पुरस्कार)

सपना आता, हर दिन, हर मास,
जो जगाता दिल में एक ख्वाब खास।
मन-मस्तिष्क में जगाता एक उमंग,
ऐसा लगता कि बस रहूँ इसी में मगन।
सपनों के होते कई प्रकार,
पर न होता कोई रूप-आकार।
ऐसा ही एक निराकार सा, ख्वाब है मेरा,
महात्मा गाँधी जैसा व्यक्तित्व बनना,
और भारत माता की सेवा करना।
सपना है मेरा।

उसी राह पर हुआ अग्रसर,
जिसके लिए रोज़ाना ढूँढता मैं नए अवसर।
स्वयं को परखना और सुधारना,
है इसके लिए श्रमदान मेरा।
एक निराकार सा, सपना है मेरा।
न करता, न सहता,
न सहने देता मैं कोई अपराध,
चाहे मुझे करना पड़े अपनी इच्छाओं का श्राद्ध।
मैं चाहता सूर्य की तरह चमकना हूँ,
एक प्रभावशाली व्यक्तित्व बनना
सपना है मेरा।

आते संकट मार्ग में कई,
सहने पड़ते झंझावात कई।
पर वो न डगमगा पाते मेरे आत्म-विश्वास को,
और भर देते नई ऊर्जा, एक नवीन जोशीलेपन को।
कई लोग पूछते, डॉक्टर, इंजीनियर क्यों नहीं बनते?
उन्हें क्या पता, मुझे महात्मा गाँधी जैसा बनना है।
अपने मन-मस्तिष्क को पहले सशक्त बनाना है,
फिर मैं चाहे बनूँ डॉक्टर या इंजीनियर।
मुझमें न होगा कभी कोई डर या फिक्र।।

मेरा है मेरे सपनों से अटूट नाता,
जो हर पल, हर दिन।
हर बाधा में साथ निभाता,
मैं ज़रूर बनूँगा एक दिन,
एक चमकता सितारा।
हिंद महासागर से भी जहाँ होगा
गहरा मेरा, मेरे देश और आदर्शों से नाता।
महात्मा गाँधी जैसा व्यक्तित्व बनना,
और भारत माता की सेवा करना।
सपना है मेरा।।

रूद्र प्रताप (13-16 वर्ष)

मेरा सपना

(तृतीय पुरस्कार)

सपना है मेरा कि, करके कुछ दिखाऊँ,
इस देश को आगे मैं बढ़ाऊँ।
करूँ कुछ ऐसा कि मिले परिणाम,
गूँज उठे मेरे माता-पिता का नाम।
गर्व से हो उनका सिर ऊँचा,
मेरा, सबका और देशवासियों का।
करनी होगी मेहनत,
सिर्फ मेहनत से क्या होगा।
रखनी होगी हिम्मत,
हो गया सपना पूरा अगर।
हो जाऊँगी मैं अमर,
नाम होगा इतिहास के पन्नों पर मेरा।
फिर होगा एक नया सवेरा,
नेहरू, गाँधी, कलाम के संग।
होगा नाम मेरा।।

सना ख़ान (13-16 वर्ष)

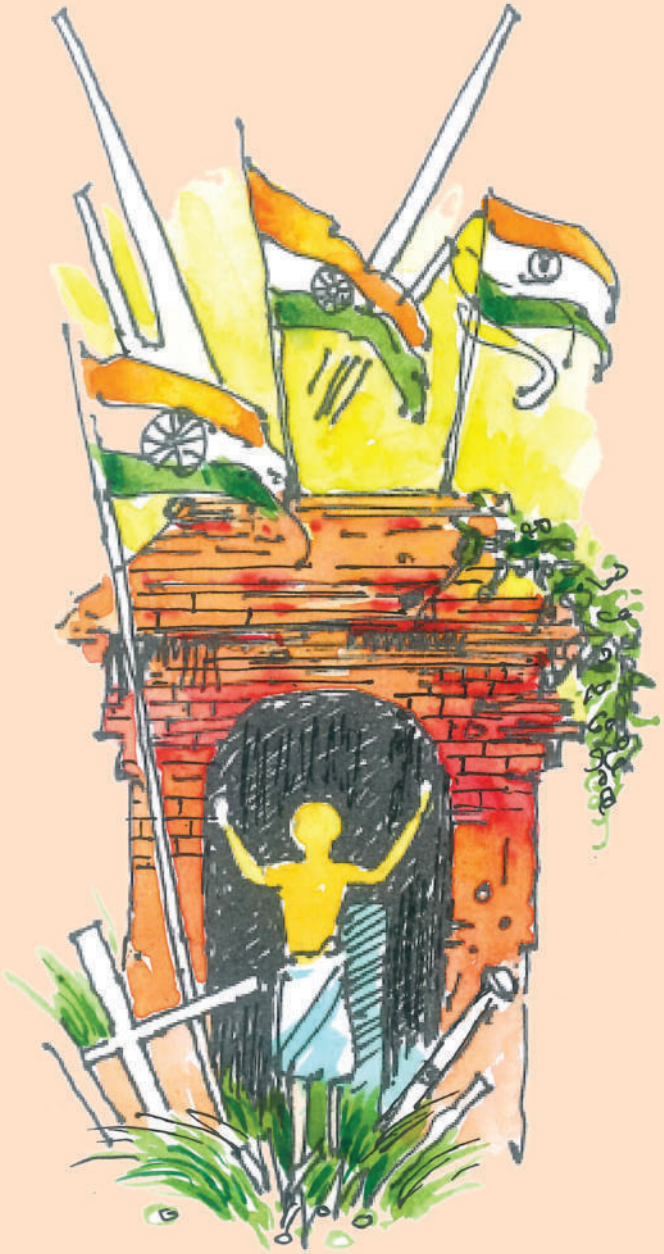

बाल भवन के प्रदर्शन कला विभाग की गतिविधियों की एक झलक

पुरस्कृत चित्रांकन एवं स्लोगन

(आयु वर्ग : 10 से 12 वर्ष)

ध्रुवी उपाध्याय - प्रथम पुरस्कार

कृष्ण - द्वितीय पुरस्कार

जिज्ञासा गोला - तृतीय पुरस्कार

पुरस्कृत चित्रांकन एवं स्लोगन

(आयु वर्ग : 13 से 16 वर्ष)

सोनू - प्रथम पुरस्कार

पूजा जायसवाल - तृतीय पुरस्कार

रूहानी पंडित - द्वितीय पुरस्कार

बाल भवन के शिल्पकला एवं चित्रकला विभाग की गतिविधियों की एक झलक

बच्चों के लिए अभ्यास कार्य

(क) रिक्त स्थान के लिए दिए गए शब्दों में से उचित शब्द का चयन करें।

1. अपनी गलती तुरन्त स्वीकार कर लेने वाले व्यक्ति ..... होते हैं।
   सद्‌गुणी, निर्गुणी, अवगुणी, इनमें से कोई नहीं।
2. उसकी बात का कोई उत्तर नहीं दे सका, सब ..... हो गए।
   शर्मिन्दा, निरुत्तर, निरंतर, निरादर
3. शिक्षक दिवस पर छात्रों ने शिक्षक को पुस्तक ..... की।
   हस्तगत, प्रदान, दान, भेंट
4. हिन्दी भारत की ..... भाषा है।
   अंतर्राज्यीय, मूल, राज, राष्ट्र
5. उनका व्यक्तित्व ..... है।
   सुमति, चमकीला, आकर्षक, सुरक्षित
6. पिछले कुछ दशक ..... क्रांति के रहे हैं।
   व्यवहार, अत्याचार, आतंक, संचार
7. करत-करत अभ्यास के जड़मति होत ..... ।
   स्वजन, सुजान, प्रियजन, मेहमान
8. विकास के लिए ..... आर्थिक आवश्यकता होती है।
   विविधता, आत्मनिर्भरता, सक्षमता, बहुलता
9. वृष्टि न होने से सूखा पड़ने की ..... है।
   आशा, चिन्ता, संभावना, आशंका
10. विद्या ..... मनुष्य की शोभा नहीं होती।
    के अनुसार, के बिना, के मारे

(ख) विलोम शब्द

1. रात – ....
2. श्याम – ....
3. आकस्मिक – ....
4. सफेद – ....
5. खट्टा – ....
6. आकाश – ....
7. ज्ञानी – ....
8. ऊपर – ....
9. अर्श – ....
10. उदय – ....

(ग) पर्यायवाची शब्द

1. रात – ....
2. फूल – ....
3. सूरज – ....
4. आँखें – ....
5. बिजली – ....
6. समय – ....
7. जल – ....
8. धरती – ....
9. कृष्ण – ....
10. वृक्ष – ....

उत्तरमाला

क. रिक्त स्थान

1. सद्‌गुणी 2. निरुत्तर 3. भेंट 4. राजभाषा 5. आकर्षक 6. संचार 7. सुजान 8. आत्मनिर्भर 9. आशंका 10. के बिना

ख. विलोम शब्द

1. दिन 2. श्वेत 3. नियमित 4. काला 5. मीठा 6. पाताल 7. अज्ञानी 8. नीचे 9. फर्श 10. अस्त

ग. पर्यायवाची शब्द

1. रात्रि 2. सुमन 3. रवि 4. लोचन 5. विद्युत 6. वक्त 7. पानी 8. जमीन 9. कन्हैया 10. पेड़

(घ) नीचे लिखे एकवचन शब्दों के बहुवचन शब्द लिखें।

क्र.सं.	एकवचन	बहुवचन
1.	आदमी	.....
2.	डाकू	.....
3.	यह	.....
4.	जौ	.....
5.	दादा	.....
6.	कौआ	.....
7.	मैं	.....
8.	सखी	.....
9.	कामना	.....
10.	महल	.....
11.	नाली	.....
12.	कलम	.....
13.	नदी	.....
14.	नेता	.....
15.	अमीर	.....
16.	बिटिया	.....

(ड) नीचे दिये गये अंकों को देवनागरी में लिखें।

1. 19 : ....
2. 29 : ....
3. 31 : ....
4. 39 : ....
5. 49 : ....
6. 53 : ....
7. 56 : ....
8. 63 : ....
9. 72 : ....
10. 75 : ....
11. 79 : ....
12. 85 : ....
13. 88 : ....
14. 93 : ....
15. 95 : ....
16. 98 : ....

उत्तरमाला

घ. नीचे लिखे एकवचन शब्दों के बहुवचन शब्द लिखें।

1. आदमी 2. डाकू 3. ये 4. जौओं 5. दादा 6. कौए 7. हम 8. सखियाँ

9. कामनाएँ 10. महल 11. नालियाँ 12. कलमें 13. नदियाँ 14. नेतागण 15. अमीरलोग 16. बिटियाँ

ड. नीचे दिये गये अंकों को देवनागरी में लिखें।

19 (उन्नीस), 29 (उनतीस), 31 (इकतीस), 39 (उन्तालीस), 49 (उनचास), 53 (तिरपन), 56 (छप्पन), 63 (तिरसठ), 72 (बहत्तर), 75 (पचहत्तर), 79 (उनासी), 85 (पचासी), 88 (अठासी), 93 (तिरानवे), 95 (पचानवे), 98 (अट्ठानवे)

बाल भवन के शारीरिक शिक्षा विभाग की गतिविधियों की एक झलक

कर्मचारियों की स्वरचित कविताएं

आज़ादी का अमृत महोत्सव : राजभाषा हिन्दी

(प्रथम पुरस्कार)

है स्वतंत्र अब देश हमारा,
परवश और परतंत्र नहीं।
स्वयं बने और स्वयं खड़े हम,
किसी और के यंत्र नहीं।

खुली हवा में सांस ले रहे,
स्वाबलंबी हैं, सक्षम हैं।
दिन-दिन ऊँचा होता जाता,
भारत माँ का परचम है।

हैं विकास की सीढ़ी पर हम,
नित-नित बढ़ते चले चले।
अब अपने नयनों में हरदम,
नूतन सपने पलें पलें।

आज़ादी का अमृत महोत्सव,
स्वाभिमान का बोधक है।
वर्ष पचहत्तर का मानक,
जुग-जुग जीने का द्योतक है।

एक राष्ट्र है एक ध्येय है,
एक ही प्राण हमारा है।
राजभाषा भी एक है - हिन्दी,
एक सूत्र की धारा है।

हिन्दी सरस, मधुर भाषा है,
और हिन्दी व्यावहारिक भी।
संस्कृत से उपजी हिन्दी,
आधुनिक भी है, सांस्कारिक भी।

हिन्दी में विज्ञान छिपा है,
हर स्वर, व्यंजन अद्‌भुत हैं।
हिन्दी में व्यायाम समाहित,
करती वचन अलंकृत है।

हिन्दी करती है आहलादित,
हिन्दी में प्रभुता आप्लावित।
शब्द सभी करती संसाधित,
भाव सभी इससे प्रतिपादित।

आओ हिन्दी और बढ़ाएं,
आओ हिन्दी पढ़ें पढ़ाएं।
खुद हिन्दी में बात करें,
बच्चों से हिन्दी में बतियाएं।

बाल कथाएं हिन्दी में हों,
उपन्यास भी हिन्दी में।
वाद-विवाद का मज़ा अलग है,
यदि करें हम हिन्दी में।

यूँ भी हिन्दी ने अब तक है,
कठिन यात्रा वहन करी।
बाधाएं आईं कितनी पर,
मस्तक ऊँचा, डटी रही।

अब जाकर धारा है बदली,
हिन्दी के अनुकूल हुई।
वर्षों की दृढ़ चेष्टाओं से,
अब हिन्दी की तूल हुई।

संयुक्त राष्ट्र में हिन्दी के,
भाषण ने धूम मचाई थी।
उस दिन हिन्दी भाषा मन में,
मन्द-मन्द मुस्काई थी।

'मन' की बात है हिन्दी में,
जनहित की बात है हिन्दी में।
'गूगल' भी हिन्दी में आया,
'ऐप' सभी अब हिन्दी में।

'मून-मिशन' भी 'चन्द्रयान',
और 'सन' भी अब 'आदित्य' हुआ।
'इंडिया' में भी अब हिन्दी वाला,
है 'भारत' दीप्त हुआ।

राजपत्र की भाषा अब,
जन-जन के हृदय समाई है।
राखी पर भाई की चिट्ठी भी,
हिन्दी में आई है।

आज़ादी के अमृत महोत्सव में,
आओ एक प्रण लें हम।
है अपनी पहचान जो हिन्दी,
और सुदृढ़ अब कर लें हम।

आओ भाषा में भी अब,
हम सब स्वतंत्र हो जाएं यूँ।
हिन्दी में जीना सीखें,
नित हिन्दी को अपनाएं हम।

नेहा वत्स खंकरियाल (रा.बा.भ.)

स्वच्छ भारत, श्रेष्ठ भारत

(द्वितीय पुरस्कार)

सबसे पहले अपने घर को, नियमित साफ करूँगा।
'स्वच्छ भारत, श्रेष्ठ भारत', सपना साकार करूँगा।

गली-गली कूंचों में जाकर, नाली साफ करूँगा।
'स्वच्छ भारत, श्रेष्ठ भारत', सपना साकार करूँगा।
जहां दिखेंगी गंदी सड़कें, मैं कूड़ा साफ करूँगा।
'स्वच्छ भारत, श्रेष्ठ भारत', सपना साकार करूँगा।

फैंकेगा कोई गुटखा खाकर, उसको साफ करूँगा।
'स्वच्छ भारत, श्रेष्ठ भारत', सपना साकार करूँगा।
ना फैंकूँगा नदी में कूड़ा, इसका ध्यान रखूँगा।
'स्वच्छ भारत, श्रेष्ठ भारत', सपना साकार करूँगा।

वृक्ष लगाऊँगा मैं हर घर, ना पेड़ को कटने दूंगा ।
'स्वच्छ भारत, श्रेष्ठ भारत', सपना साकार करूँगा।
गाँव, शहर, बस्ती में जाकर, कूड़ा साफ करूँगा।
'स्वच्छ भारत, श्रेष्ठ भारत', सपना साकार करूँगा।

सार्वजनिक शौचालय जाकर, सबको साफ करूँगा।
'स्वच्छ भारत, श्रेष्ठ भारत', सपना साकार करूँगा।
सबके मिलकर साथ चलूँगा, प्रेरित और करूँगा।
'स्वच्छ भारत, श्रेष्ठ भारत', सपना साकार करूँगा।

मेरी माटी देश है मेरा, जगमग इसे करूँगा।
'स्वच्छ भारत, श्रेष्ठ भारत', सपना साकार करूँगा।
तेरा, मेरा, इसका, उसका, मन में ना भाव रखूँगा।
ये देश है मेरा, माटी मेरी, इसको 'स्वच्छ' रखूँगा।

राहुल (रा.बा.भ.)

स्वच्छता अभियान

(तृतीय पुरस्कार)

आज भारत आज़ाद हुआ,
स्वच्छता का अहसास हुआ।
बेड़ियों से आज़ाद होकर,
तन-मन अपना स्वच्छ हुआ।

गांधी जी की जयन्ती पर,
स्वच्छता अभियान चलाया था।
गांधी जी के सपने को,
अपना अभियान बनाया था।

एक नहीं हज़ार नहीं,
करोड़ों का अभियान था ये।
बच्चा हो या हो जवान,
बूढ़ों का अभियान था ये।

चरण-चरण पर गली-गली में
गाँव-गाँव में शहर-शहर,
घर हो या हो दफ्तर अपना
स्वच्छता के महत्व को सबको
अवगत उन्होंने कराया था।

चरण-चरण पर बढ़ा कदम,
गली-गली में, गाँव-गाँव में,
शहर-शहर तक हर किसी ने
स्वच्छता को अभियान बनाया था।

भारत के विकास में,
स्वच्छता के इतिहास में।
सांस्कृतिक कार्यक्रम, तकनीकी व
गैर-तकनीकी अनेकों अभियान चलाये थे।।

नतीजा सबके सामने,
विविधता में एकता।
सबने इसको माना है,
देश हमारा विकासशील।
आज विकसित होते आ रहा है।।

सिर्फ गली नहीं, गाँव नहीं, शहर नहीं,
देश-विदेश में भी नारा है।
जय भारत-जय भारत,
अब सबका यही नारा है।

स्वच्छ भारत, श्रेष्ठ भारत,
सबके मनों का विश्वास है ये।
रहे भारत प्रगति की ओर,
सिर्फ यही, हर भारतीय की सोच है।

स्वच्छ भारत,
श्रेष्ठ भारत,
यही हमारा नारा है।
यही हमारा नारा है।।

इरफ़ान अली (ज.बा.भ. मांडी)

बाल भवन की कुछ अन्य गतिविधियों की एक झलक

हिन्दी पखवाड़ा कार्यक्रम
से संबंधित सामग्री को प्रकाशन
के रूप में तैयार करने का
यह प्रथम प्रयास है।
इस सम्बंध में यदि आपके
कोई सुझाव हैं तो उनका
सहर्ष स्वागत है।

राष्ट्रीय बाल भवन
NATIONAL BAL BHAVAN